पहली इकाई

१ भारत महिमा

- जयशंकर प्रसाद (१८९०-१९३७)

कवि-परिचय

जीवन-परिचय : छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ महाकवि प्रसाद जी का जन्म सन १८९० में वाराणसी के सरायगोवर्धन में हुआ था। प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने साहित्य की काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में लेखन किया। उन्होंने संपूर्ण साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं उसके गौरवशाली अतीत को अभिव्यक्त किया है।

प्रमुख कृतियाँ : **काव्य** : 'झरना, आँसू, लहर आदि। **महाकाव्य** : 'कामायनी'। **ऐतिहासिक नाटक** : 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी'। **कहानी संग्रह** : 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' आदि। **उपन्यास** : 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती'।

पद्य-परिचय

छायावादी आधुनिक काव्य : प्रकृति के माध्यम से देशप्रेम व मानवीय गुणों का बखान करना छायावादी कविता की विशेषता रही है। प्रस्तुत काव्य में भी इन्हीं गुणों को दर्शाया गया है।

प्रस्तावना : प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि जयशंकर जी ने भारत के गौरवशाली अतीत का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। प्रस्तुत कविता भारतीयों के मन में अपने देश के प्रति प्रेम व आदर का भाव निर्मित करती है। इस कविता द्वारा कवि ने हमें त्याग, देश प्रेम एवं देश पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित किया है।

सारांश

भारत देश की महिमा अपार व अगाध है। इसका अतीत समृद्ध, संपन्न व गौरवशाली है। भारत ने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जागृत किया है। विश्व को संगीत की अनमोल धरोहर दी है। संसार को प्रेम, दया, सत्य, शील, अहिंसा, करुणा, मानवता व शांति जैसे मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाया। भारतमाता के वीर पुत्रों ने भारत की गरिमा को गौरवान्वित करने का कार्य किया। भारतीयों को अपने अतीत के गौरव को कदापि नहीं भूलना चाहिए। प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह देश की गौरवशाली अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहे।

शब्दार्थ

उषा	- भोर	साम	- सामवेद
उपहार	- भेंट	भिक्षु	- संन्यासी
अभिनंदन	- स्वागत	गोरी	- यवन शासक
हीरक हार	- हीरों का हार	सिंहल	- श्रीलंका देश
आलोक	- प्रकाश	चरित	- चरित्र
व्योमतम	- आकाश में फैला अंधकार (यहाँ अर्थ संसार में फैला अंधकार)	पूत	- पुत्र
		भुजा	- बाहु
		संपन्न	- समृद्ध
अखिल संसृति	- पूरा विश्व	विपन्न	- गरीब, विपत्ति ग्रस्त
अशोक	- शोक से रहित	टेव	- दृढ़, आदत
वाणी	- वचन	हर्ष	- खुशी
सप्रीत	- प्रेम के साथ	कर	- हाथ
अभिनंदन	- प्रोत्साहन	विमल	- निर्मल

CHETANA PUBLICATIONS (INDIA) LLP

मुहावरे

निछावर करना - अर्पण करना, समर्पित करना।

भावार्थ

- **हिमालय के ..... हीरक हार।**

भारत की महिमा का गुणगान करते हुए कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि हिमालय पर्वत के आँगन में उषा ने हँसकर किरणों का उपहार दिया। उषा ने इस देश का अभिनंदन करते हुए इसे हीरों का हार पहनाया अर्थात सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषारूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो।

- **जगे हम ..... उठी अशोक।**

उषा के उदित होते ही सभी भारतीय ज्ञान रूपी किरणों के साथ नींद से जाग गए। वे सिर्फ जागे नहीं, बल्कि उन्होंने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जगाया। इसी तरह समस्त संसार में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य भी किया। भारतीयों के इसी श्रेयस्कर कार्य के कारण ही विश्व रूपी आकाश में फैला हुआ अंधकार नष्ट हुआ और इस तरह समस्त संसार से शोक, दुख आदि का अंत हुआ।

- **विमल वीणा ..... साम संगीत।**

भारत देश की महिमा इतनी गौरवशाली, समृद्ध व महान है कि इसी देश ने विश्व को संगीत की अनमोल सौगात दी। संगीत की देवी माँ सरस्वती ने अपने एक हाथ में वीणा व दूसरे हाथ में प्रेम के साथ कमल को धारण कर सभी को संगीत का अमृत-पान करवाया। इसी कारण विश्व रूपी सप्तसिंधुओं में संगीत के सप्तस्वर गूँज उठे और मधुर सामवेद संगीत का आविष्कार हुआ।

- **विजय केवल ..... घर घूम।**

भारत पर कई बार विदेशियों ने हमला किया। फिर भी भारत की अखंडता कायम रही। इन युद्धों में भारत की जीत हुई। भारत ने सभी को सिखलाया कि यह सिर्फ लोहे की जीत नहीं बल्कि यह जीत हमारे धर्म की है। धर्म का ठीक से पालन करने में ही व्यक्ति की जीत है। इससे बढ़कर कोई दूसरी जीत नहीं हो सकती। भारत ने दुनिया के सामने कई आदर्श रखे हैं। जैसे कि राजकुमार गौतम बुद्ध बौद्ध भीक्षु हो गए और उन्होंने जगह-जगह जाकर सभी को दीक्षा दी और दया का पाठ सिखलाया।

- **'गोरी' को ..... भी सृष्टि।**

भारत देश ने यवनों पर दया दिखलाई। भारत ही वह देश है जहाँ यवन शासक सेल्यूकस निकोटर को युद्ध में पराजित करने के बाद भी चंद्रगुप्त ने उसे मौत की सजा नहीं दी। यवन युद्ध में परास्त हो गए, फिर भी भारत के वीर क्षत्रियों ने उन्हें दया के रूप में जीवनदान दिया। आज चीन, जापान आदि में जो धर्मोन्नति निरंतर फैली हुई है, वह भारत की ही देन है। आखिर, हमारी इस स्वर्णभूमि को भगवान गौतम बुद्ध के रूप में अनमोल रत्न जो मिल गया था। गौतम बुद्ध के मार्गदर्शन में बौद्ध भिक्षुओं ने बर्मा के लोगों को बौद्ध धर्म व उसके त्रिरत्न (बुद्ध, संघ, धम्म) का ज्ञान कराया। उन्होंने ही श्रीलंका को पंचशील (झूठ न बोलना, चोरी न करना, नशा न करना, हिंसा न करना, पाप न करना आदि) का ज्ञान कराया हमारे देश ने ही सिंहल अर्थात श्रीलंका को शील रूपी मूल्य दिया, जिसका अनुकरण करके वहाँ के लोगों ने अपनी चतुर्दिक प्रगति की।

- **किसी का ..... आए थे नहीं।**

भारत की प्रकृति की अनोखी छटा निराली है। यहाँ की प्रकृति इतनी उदात्त है कि उसने हम सभी को इतना सब कुछ दे दिया है कि हमें किसी से कुछ माँगने की परिस्थिति निर्मित नहीं होती। अत: हमें किसी से कुछ माँगने की या किसी से कुछ छीनने की आवश्यकता ही नहीं पैदा हुई। हम सब आर्य हैं। हम यहाँ पर किसी अन्य स्थान से नहीं आए थे, बल्कि इस पवित्र देश में ही हमारा जन्म हुआ था, सो हमारी जन्मभूमि भी यही है।

- **चरित थे ..... न सके विपन्न।**

भारतमाता के पुत्र चरित्रवान रहे हैं। उनकी भुजाओं में शक्ति रही है और वे हमेशा नम्रतापूर्वक व्यवहार करते रहे हैं। उनके हृदय में देश के गौरव के लिए अपार श्रद्धा व देशप्रेम की भावना रही है। अपने इन गुणों के कारण वे किसी को भी विपन्न या दीन नहीं देख सकते। दीन-दुखियों की मदद के लिए वे सदैव तत्पर रहे हैं। मानवसेवा ही उनका परम ध्येय रहा है।

CHETANA PUBLICATIONS (INDIA) LLP

- **हमारे संचय ..... रहती थी टेव।**

कवि के मतानुसार भारत देश को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। हमारे पास धन-धान्य की कमी नहीं थी। इसी कारण दान करने में हम पीछे नहीं हटे। 'अतिथि देवो भव:' की संकल्पना का भारतवासियों ने पालन किया। भारतमाता के पुत्र वचन को महत्त्व देते थे। जैसा कहते थे, वैसा करते भी थे। उनके वचनों में सत्यता थी, हृदय में तेज था और उनकी प्रतिज्ञा भी दृढ़ हुआ करती थी।

- **वही है रक्त ..... दिव्य आर्य संतान।**

हम भारतवासी अपने अतीत के गौरव को कैसे भूल सकते हैं? आज इतने युगों बाद भी हम उसी भारत देश के निवासी हैं। आज भी हमारी रगों में वही रक्त है वही साहस है वही शांति एवं वही ज्ञान विद्यमान है। आखिर हम वही दिव्य आर्य संतान हैं, जिसने वर्तमान भारत में भारतीयता को जीवित रखा है। हमारे अंतर्मन में आज भी शांति व सामर्थ्य निहित है।

- **जिएँ तो सदा ..... हमारा प्यार भारतवर्ष।**

आज हम सभी भारतवासी देश के गौरव एवं उसकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इसी कारण हम प्रगति पथ पर हैं और बड़ी खुशी के साथ हमें इस बात का अभिमान है। इस पवित्र-पावन एवं गौरवशाली भूमि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हम सदैव तत्पर हैं। आखिर, यह हमारा प्रिय भारतवर्ष है, जिसके लिए हम सभी अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तप्तर हैं रहे थे, रहे हैं और रहेंगे।

MASTER KEY QUESTION SET - 1

प्रश्न १ (अ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति अ (१): आकलन कृति

(१) आकृति पूर्ण कीजिए।

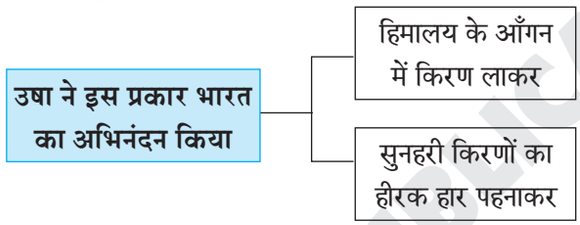

(२) आकृति पूर्ण कीजिए।

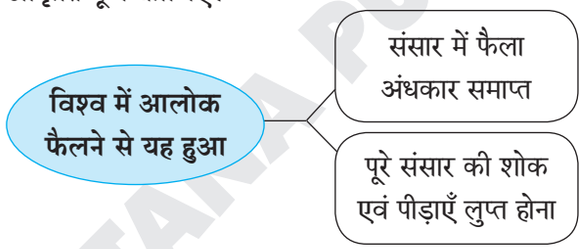

पद्यांश: १ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १

हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम संगीत। .....

कृति अ (२): आकलन कृति

(१) उचित पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

(i) **जैसे ही सप्तस्वर सप्तसिंधु में गूँज उठे, तब .....**
(क) विमल वीणा ने वाणी ली।
(ख) कोमल कर में कमल लिया।
(ग) मधुर साम संगीत शुरू हुआ।

उत्तर: जैसे ही सप्तस्वर सप्तसिंधु में गूँज उठे, तब मधुर साम संगीत शुरू हुआ।

(२) सहसंबंध लिखिए।

(i) **वाणी** : वीणा :: **कर** : .....

(ii) **लोक** : आलोक :: **संसृति** : .....

उत्तर: (i) कमल (ii) अशोक

कृति अ (३): निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(१) जगे हम ..... उठी अशोक।

उत्तर: कवि प्रसाद जी कहते हैं कि उषा के उदित होते ही सभी भारतीय ज्ञान रूपी किरणों के साथ नींद से जाग गए। वे सिर्फ जागे ही नहीं बल्कि उन्होंने दुनिया में व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके सभी को जगाया। इसी तरह समस्त संसार में ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य हमने ही किया। भारतीयों के इस श्रेयस्कर कार्य के कारण ही विश्व रूपी आकाश में फैला हुआ अंधकार नष्ट हुआ और इस तरह से समस्त संसार से शोक, दुख आदि पीड़ाएँ मिट गईं।

प्रश्न २ (आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति आ (१): आकलन कृति

(१) संजाल पूर्ण कीजिए।

CHETANA PUBLICATION (INDIA) LLP

(२) (i) आकृति पूर्ण कीजिए।

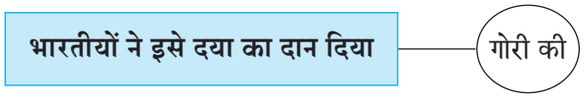

पद्यांश: २ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।

'गोरी'को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।

किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आए थे नहीं।.....

कृति आ (२) :आकलन कृति

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

(i)

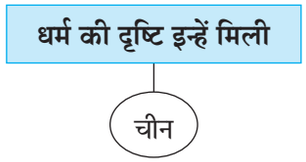

(ii)

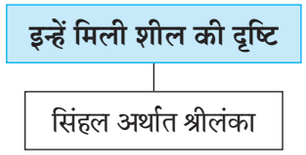

(२) निम्नलिखित कथन सही है या गलत लिखिए।

(i) हम भारत में दूसरी जगह से रहने के लिए आए।

(ii) धरा पर लोहे व धर्म की विजय की धूम रही है।

उत्तर: (i) गलत (ii) सही

कृति आ (३): निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ लिखिए।

(१) किसी का ..... आए थे नहीं।

उत्तर: कवि प्रसाद जी कहते हैं कि भारत की प्रकृति की अनोखी छटा निराली है। यहाँ की प्रकृति इतनी उदात्त है कि उसने हमें इतना सब कुछ दे दिया है कि हमें किसी से कुछ माँगने की स्थिति निर्माण नहीं होती। अत: हम पर किसी से कुछ माँगने की या किसी का कुछ छीनने की आवश्यकता ही नहीं हुई। हम सब आर्य हैं। इसी कारण यही हमारी जन्मभूमि थी। हम यहाँ पर किसी अन्य स्थान से नहीं आए थे, बल्कि हम इस पवित्र देश में ही निर्मित हुए थे।

प्रश्न ३ (इ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति इ (१): आकलन कृति

(१) एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

(i) **हमारे लिए सदैव देव कौन है?**

उत्तर: अतिथि हमारे लिए सदैव देव हैं।

(ii) **भारतवासी किनकी संतान हैं?**

उत्तर: भारतवासी आर्यों की संतान हैं।

(२) उचित पर्याय चुनकर लिखिए।

(i) **हमें भारत पर/अपने आप पर सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए।**

उत्तर: हमें भारत पर सर्वस्व निछावर कर देना चाहिए।

(ii) **भारतवासियों को देश के लिए/परिवार के लिए जीना चाहिए।**

उत्तर: भारतवासियों को देश के लिए जीना चाहिए।

पद्यांश: ३ पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान।

जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

कृति इ (२): आकलन कृति

(१) कृति पूर्ण कीजिए।

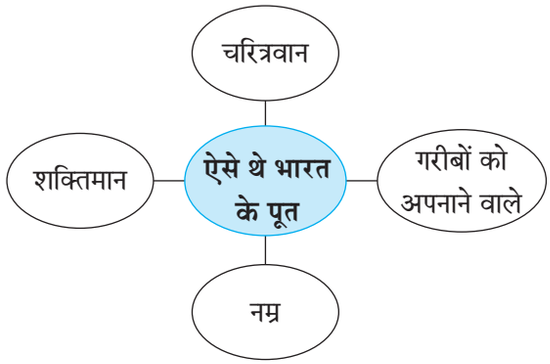

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

'अ'	'ब'
(i) वचन	(क) तेज
(ii) हृदय	(ख) दिव्य
(iii) प्रतिज्ञा	(ग) टेव
(iv) आर्य संतान	(घ) सत्य

उत्तर: (i - घ), (ii - क), (iii - ग), (iv - ख)

कृति इ (३): निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।

(१) जिएँ तो सदा ..... हमारा प्यारा भारतवर्ष।

उत्तर: कवि प्रसाद जी कहते हैं कि आज हम सभी भारतवासी देश के गौरव एवं उसकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। हमें इसके लिए ही जीना चाहिए और बड़ी खुशी

CHETANA PUBLICATIONS (INDIA) LLP

के साथ हमें इस बात का अभिमान होना चाहिए। इस पवित्र-पावन एवं गौरवशाली भूमि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए हम सदैव तत्पर हैं। आखिर यह हमारा प्यारा भारतवर्ष जिसके लिए हम अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए उत्सुक हैं।

स्वाध्याय विषयक कृतियाँ

***(१) निम्नलिखित पंक्तियों का तात्पर्य लिखिए।**

(i) कहीं से हम आए थे नहीं - .....

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि भारतीय आर्य वंश के हैं। भारत की भूमि उनकी जन्मभूमि है। इसी पुण्यभूमि के वे मूल निवासी हैं, न कि कहीं से आए हुए विदेशी।

(ii) वही हम दिव्य आर्य संतान - .....

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि हम आर्यव्रत आर्यों की दिव्य संतान हैं। हमारी रगों में आर्यों के समान ज्ञान, साहसी रक्त विद्यमान है। हम उन्हीं आर्यों की संतान हैं, जिन्होंने भारतीयता को जीवित रखा है।

***(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।**

संचय
सत्य
अतिथि
रत्न
स्वर्णभूमि
वचन
दान
हृदय
तेज
देव

उत्तर :

	अ	आ
(१)	संचय	दान
(२)	सत्य	वचन
(३)	अतिथि	देव
(४)	हृदय	तेज
(५)	स्वर्णभूमि	रत्न

(३) लिखिए।

(i) कविता में प्रयुक्त दो धातुओं के नाम :

(ii) भारतीय संस्कृति की दो विशेषताएँ:

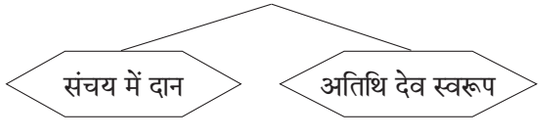

***(४) प्रस्तुत कविता की अपनी पसंदीदा किन्हीं दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।**

उत्तर : विद्यार्थी स्वयं अपेक्षित उत्तर लिखेंगे।

पद्य-विश्लेषण

***(५) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य-विश्लेषण कीजिए।**

(i) रचनाकार का नाम

(ii) रचना का प्रकार

(iii) पसंदीदा पंक्ति

(iv) पसंदीदा होने का कारण

(v) रचना से प्राप्त संदेश

उत्तर : (i) **रचनाकार का नाम** : जयशंकर प्रसाद

(ii) **रचना का प्रकार** : छायावादी आधुनिक काव्य

(iii) **पसंदीदा पंक्ति** : हिमालय के आँगन में उसे,
किरणों का दे उपहार;
उषा ने अभिनंदन किया,
और पहनाया हीरक हार।

(iv) **पसंदीदा होने का कारण** : सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।

(v) **रचना से प्राप्त संदेश** : इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

❖❖❖

CHETANA PUBLICATIONS (INDIA) LLP